अक्रम यूथ

जुलाई 2022 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

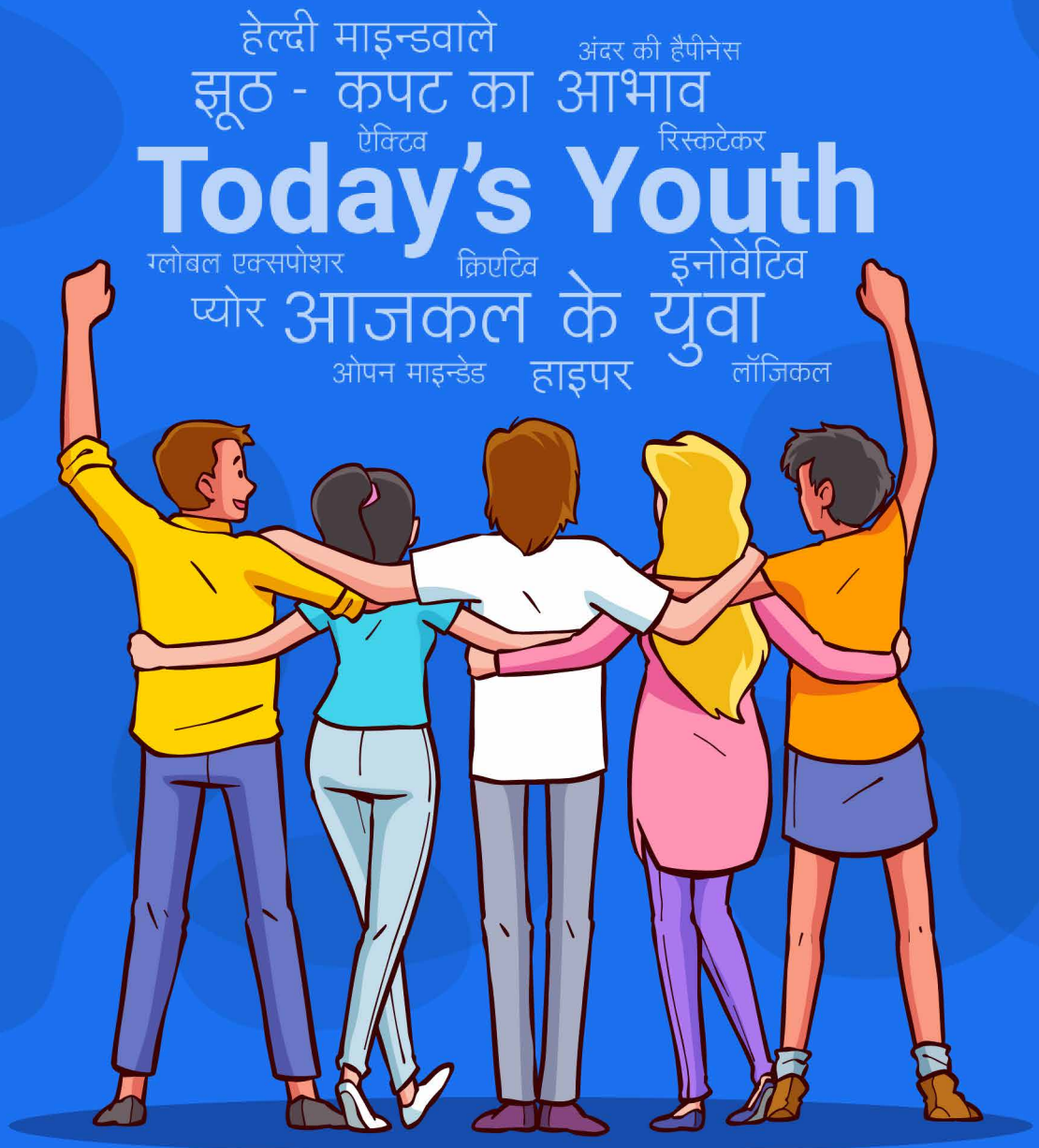

अनुक्रमणिका

04 आजकल के युवा!

07 धन्य है इस युवा वर्ग को!

09 swot एनालिसिस

12 कौन सा पलड़ा भारी?

16 Food for thought

18 आज का युवा कैसा?

20 नीरू माँ की लाइफ का यू-टर्न

21 मोड़ने वाला मिले तो...

22 अंदर एक झांकी...

जुलाई 2022
वर्ष : 10, अंक : 3
अखंड क्रमांक : 111

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds

5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

आज का युवा अर्थात किसी भी देश या समाज का आने वाला कल! युवा वर्ग समाज के विकास, बदलाव और भविष्य का पर्याय है। युवा पीढ़ी जितनी मजबूत होगी, भविष्य की इमारत की बुनियाद भी उतनी ही मजबूत बनेगी। इस दौर में कई युवा प्रेरणादायी जीवन जी रहे हैं। लेकिन दूसरी तरफ, कई युवक सही समझ तथा मार्गदर्शन के अभाव में व्यसन, कुसंग और मोह से भरे हुए वातावरण में फँसकर दुःख और हताशा का शिकार बन रहे हैं।

यदि युवा शक्ति विपरीत दिशा में मुड़ जाती है तो उसका गंभीर परिणाम आता है, लेकिन यदि उसी शक्ति को सही दिशा में मोड़ दिया जाए तो उसके अद्‌भुत परिणाम मिल सकते हैं। तो वह कौन सी समझ है जिससे आज का युवा वर्ग अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा में मोड़ सके, अपनी कमजोरियों को स्वीकार करके उसमें से बाहर निकल सके, तथा किसी भी परिस्थिति में डगमगाए नहीं ऐसा मजबूत बन सके? वह तमाम प्रस्तुत अंक में समाविष्ट की गई है।

इतना ही नहीं, विशेष रूप से आज कल के युवाओं के लिए इस महीने से तीन अंक की शृंखला शुरू की जा रही है। आशा है कि यह शृंखला सब को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करेगी और एक मजबूत युवा पीढ़ी के निर्माण के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

-डिम्पल भाई मेहता

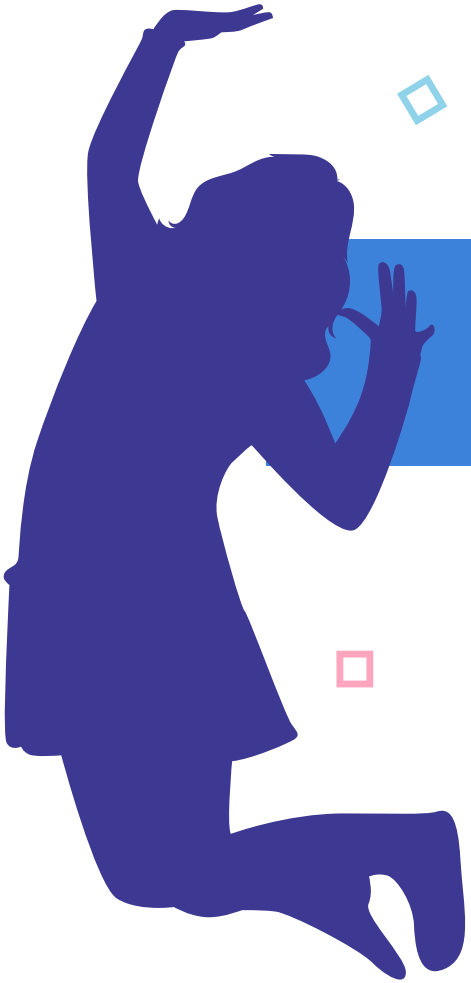

आजकल के युवा!

शाम को जब नियति घर आई उसका मूड ऑफ था। वह सीधे अपने रूम में जा रही थी कि तभी उसकी मम्मी ने आवाज़ लगाई, "नियति बेटा, खाना रेडी है। पहले खाना खा लो तो..."

"मम्मी मुझे डिस्टर्ब मत करना।" कहकर वह जल्दी से बेडरूम में चली गई और ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर दिया।

हुआ यूँ कि सुबह से ही नियति कॉलेज जाने के लिए बहुत एक्साइटेड थी। वेकेशन के बाद फिर से फ्रेन्ड्स से मिलना, ट्रिप की बातें करना, कैन्टीन के नए समोसे ट्राइ करना। इन सब में वह क्लास के लिए लेट हो गई। अंदर घुसते ही प्रोफेसर ने टॉन्ट मारा।

"इन मिस के लिए तालियाँ! जिन्होंने आज सबका रिकार्ड ब्रेक कर दिया! क्लास शुरू होने के पूरे दस मिनट के बाद पधारी हैं!"

इस इन्सल्ट से नियति को बहुत बुरा लगा। वह शर्म से मुँह नीचे करके जैसे-तैसे बेन्च पर जाकर बैठ गई। नियति की कज़िन और क्लासमेट सान्वी उसके बगल में ही बैठी थी। उसने नियति के कान में कहा, "डोन्ट वरी। तुमसे पहले यह कड़वा डोज़ मुझे भी मिला था। ये प्रोफेसर मार्क्स से नहीं बल्कि आप कितने पंक्चूअल हो उससे इम्प्रेस होते है!" दोनों की हँसी में व्यंग था।

प्रोफेसर बोर्ड पर लिख रहे थे। उनके बात करने की आवाज़ सुनकर पीछे मुड़े और फिर से गुस्सा होते हुए बोले, "साइलेन्स प्लीज़! एक तो तुम्हें टाइम की कदर नहीं है, ऊपर से क्लास में कॉन्सन्ट्रेट नहीं करते। गॉड हेल्प दिस जेनरेशन!"

एक लेक्चर खत्म हुआ। नियति का मूड अभी भी खराब था। घर लौटते समय वह बस स्टैन्ड पर खड़ी थी। एक बूढ़ी दादी को बस में चढ़ने में परेशानी हो रही थी। नियति ने उनकी मदद करके उन्हें सीट पर बिठाया। दादी ने नियति के सिर पर हाथ रखकर "थैंक यू बेटा!" कहा। दादी से आशीर्वाद पाकर नियति को अच्छा लगा। बस में फ्रेन्ड्स एक-दूसरे को वेकेशन के

फोटो दिखलाकर मस्ती कर रहे थे। नियति भी उनमें शामिल हो गई। बस का माहौल एकदम लाइव हो गया और नियति का मूड भी। तभी अचानक पास की सीट पर बैठे हुए चाचा जी चिढ़ गए।

"यह क्या हंगामा मचा रखा है? बस है या सब्जी मण्डी?"

बचा हुआ गुस्सा चाचा जी ने पास की सीट पर बैठे पैसेंजर पर निकाला, "ये आजकल के नौजवान! अपने आप में ही मगन हैं। कोई चिंता है आस-पास वालों की? जब देखो तब हंसी ठ्ठा करते रहते हैं!" चुपचाप सब ने अपने-अपने फोन, पॉकेट और पर्स में रख दिए। नियति फिर से अपसेट हो गई। बसस्टॉप आया। सान्वी और नियति एक साथ उतरे और दोनों अपने-अपने घर चले गए। नियति सीधे अपने बेडरूम में गई!

मम्मी ने भोजन की थाली नियति के रूम में रखकर कहा, "बेटा, ठ्ंडा होने से पहले खा लेना।"

पूजा रूम से बाहर आती हुई दादी बड़बड़ाई, "आजकल के बच्चे खुद से कुछ भी करना नहीं चाहते हैं। खाना भी मम्मी ही दे?"

"माँ, अभी रहने दीजिए! दिमाग गरम है।" मम्मी ने होठ पर उँगली रखते हुए इशारा किया।

"दिमाग क्यों गरम है? उसे परेशानी ही क्या है? गाड़ी में आना-जाना, ए.सी. में रहना, खाना तैयार मिल जाता है, फोन-वोन रखना और पापा के पैसे उड़ाना। कोई टेन्शन ही कहाँ है? हम तो इस उमर में चार-चार किलोमीटर चलकर कॉलेज जाते, घर का सब काम करते, कुएँ से पानी लाते..."

नियति तुरंत रूम से बाहर आई और दादी की नकल उतारते हुए कहने लगी, "...कुएँ से पानी लाते...तालाब पर कपड़े धोने जाते, लेकिन फिर भी पहला नबंर लाते। राइट दादी?" कहकर टॉन्ट मारा।

दादी "राम-राम!" करते हुए अंदर के रूम में चली गई।

"हर बात में मजाक?" मम्मी ने नियति को चुप रहने का इशारा किया।

नियति और ज्यादा इरिटेट हो गई "कम ऑन मम्मी, वर्षों से दादी का यही रिकार्ड सुन रही हूँ। अब जमाना बदल गया है। एनी वे, मुझे भूख नहीं है। मैं सान्वी के घर जा रही हूँ !" कहकर वह जिस स्पीड से घर आई थी उसी स्पीड से सान्वी के घर पहुँची।

लेकिन वहाँ भी माहौल सिरियस था। डाइनिंग टेबल पर सान्वी के पापा और उसका भाई विनीत बातें कर रहे थे। सान्वी ने नियति को इशारे से रसोई में आने को कहा। वहाँ से दोनों ने बातें सुनीं।

"विनीत, बेटा आखरी बार कह रहा हूँ। सपनों की दुनिया से बाहर आओ ऐन्ड फोकस ऑन योर करियर!"

"लेकिन पापा, आइ एम नाट श्योर कि मुझे अभी करना क्या है, लेट मी ट्राइ!"

"यू आर कन्फ्यूज्ड विनीत। ऐसे टाइम बर्बाद करने की जगह मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो, नहीं तो..."

"नहीं तो क्या? पढ़ने के पैसे नहीं दोगे? घर में से निकाल दोगे?"

"ऐसा मैंने कब कहा विनीत...?"

"कहने को बाकी रखा ही क्या है? फोकस नहीं है, सिरियसनेस नहीं है, गैर जिम्मेदार हो, आइ एम फेड अप लिसनिंग टु ऑल दिस!" कहकर विनीत घर से बाहर निकल गया और अपने फेवरेट कैफे की तरफ बाइक ले गया।

"आप भी क्या आते ही... कहाँ गया होगा? क्या खाएगा अब?" विनीत की मम्मी को चिंता होने लगी।

"कैफे की बढ़िया सैन्डवीच और कॉफी!" सान्वी ने नियति के कान में कहा और दोनों छिपकर हँसने लगीं!

पापा अभी भी गुस्से में थे। "कुछ कह सकते हैं आजकल के बच्चों को? ऊपर से जवाब देते हैं! हम तो हमारे फादर के सामने एक शब्द भी नहीं बोलते थे।"

सान्वी ने माहौल को ठीक करते हुए कहा, "मम्मी, पापा, मुझे पता है भाई कहाँ होगा। मैं उसे ढूँढ़कर मैसेज करती हूँ। आप चिंता मत करो।"

सान्वी और नियति कैफे पहुँचे। विनीत वहाँ ही बैठा था। दोनों पास की चेयर पर बैठ गए। तीनों कज़िन भाई-बहन एक-दूसरे के सामने देखकर खिल-खिलाकर हँस पड़े! सान्वी ने तुरंत ही घर पर मैसेज कर दिया।

"लगता है हम सब के घरों की एक ही रामायण है।" नियति ने कहा।

"कहानी घर-घर की! कोई सरप्राइज नहीं लगता मुझे।" सान्वी ने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा।

"पापा की नज़र में तो आई एम ए फेल्यर! समझ नहीं आता कि उन्हें कैसे समझाऊँ?" विनीत ने अपने दिल की बात कही। और नियति ने भी अपने मन का गुबार खाली करते हुआ कहा, "जाने दो भैया... आज पूरे दिन मैंने यही सब सुना है। आजकल के नौजवान! टाइम की कदर नहीं... कॉन्सन्ट्रेट नहीं करते...अपने में ही खोये रहते हैं... किसी की फिकर नहीं...कुछ भी खुद से नहीं करते..."

विनीत ने भी उसी लय में कहा, "फोकस्ड नहीं... सपनों की दुनिया में रहते हैं... जिम्मेदारी का भान नहीं है... किसी का कहा नहीं मानते! इट्स इनफ!"

"क्या हम इतने निकम्मे हैं? क्या हममें कुछ भी अच्छा नहीं है? कोई नहीं है जो हमें समझ सके?"नियति ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

पास ही की टेबल पर एक महिला बैठी थीं। तीस साल के आसपास होंगी। वे यह सब सुन रही थीं। वे खड़ी हुईं और तीनों के सामने एक पैम्फलेट रखते हुए बोली, "इन प्रश्नों का जवाब खोजने के लिए हम सब इक्कठे होंगे, आज रात की वीडियो कॉन्फरन्स पर! विल यू ऑल प्लीज़ जॉइन्?"

हमम...आप कौन? और वीडियो कॉन्फरन्स किसलिए करने वाले हैं?" विनीत ने शंकित स्वर में पूछा।

उन्होंने एक सॉफ्ट स्माइल के साथ जवाब दिया, "नथिंग मच। बस एक वर्कशाप करने वाले हैं, जिससे आजकल के युथ को, मतलब खुद को ज्यादा पहचान सकें। हम खोज ही रहे थे कि हमारे सर्कल के बाहर के युवकों का व्यू भी लें। आइ फील, यू कैन हेल्प अस। इस पैम्फलेट में डिटेल्स हैं। देख लो। आप लोगों को पसंद आए तो जॉइन करना, नहीं तो इट्स ओके।"

नियति को उनकी बातों पर विश्वास हुआ। उसने हाथ बढ़ाकर पैम्फलेट ले लिया। एक तरफ वर्कशॉप की डिटेल्स दी हुई थीं और दूसरी तरफ एक राइट अप था। जल्दी से उस पर एक नजर घुमाकर पूछा कि यह "दादाश्री" कौन हैं? उन्होंने परिचय देते हुए कहा कि परम पूज्य दादा भगवान, यानी कि दादाश्री एक ज्ञानी पुरुष हैं, जिन्होंने इस काल के अनुरूप अक्रम ज्ञान प्रदान किया, जिसमें बाहर की सिचुएशन में कोई भी फेर-बदल किए बिना कैसे आनंद में रह सकते हैं उसकी चाबियों का खजाना मिलता है! बाकी का परिचय तुम वर्कशॉप में आओगे तब देंगे। तीनों पैम्फलेट पढ़ने लगे।

धन्य है इस युवा वर्ग को!

प्रश्नकर्ता : आज का युवा वर्ग किस राह पर चल रहा है? आपकी दृष्टि में उनका भविष्य कैसा है? सही रास्ता क्या है?

दादाश्री : आज का युवा वर्ग, कोई भी मार्गदर्शन नहीं मिलने के कारण सफोकेशन में है। लेकिन आज का युवा वर्ग जो है, ऐसा युवा वर्ग पहले किसी काल में था नहीं, वैसा है। जो बहुत चोखा है, प्योर है। उसे मार्गदर्शन दें तो हिन्दुस्तान एकदम ओलराइट (ठीक) हो जाएगा। मार्गदर्शन देनेवाला मिल जाएगा थोड़े समय में, सबकुछ मिल जाएगा। और ये युवा वर्ग इतना अच्छा है, कि खुद किसी से कुछ छुपाता नहीं है। हमें सब कुछ प्योरली बता देते हैं।

एक लड़का था, वह मुझसे कहने लगा, 'दादाजी, अंदर मुझे बहुत दुःख होता है।' मैंने कहा, 'किसलिए तुझे दुःख होता है?' तब कहने लगा, 'मुझे एक ख़राब विचार आता है, इसलिए मुझे दुःख होता है। क्यों मुझे ऐसे खराब विचार आते हैं?' तब मैंने कहा, 'लेकिन क्या विचार आते हैं, वो मुझे कह ना! मैं सब ठीक कर दूँगा।' तब कहता है, 'आप विधि करवा रहे थे, उस समय बाहर से दूसरे व्यक्ति आए, तो आपने उन्हें तुरन्त बुला लिया और मुझे १० मिनट तक वहीं रोक दिया। इसलिए मेरे मन में ऐसा हुआ कि दादाजी पर गोलीबार करो।' मैंने कहा, 'बराबर है, वो मेरी भूल हुई इसलिए तुझे ऐसा विचार आया अब नहीं आएगा।' दूसरे लोगों को आने दिया और उसे नहीं आने दिया। तो व्यक्ति को बुरा लगेगा ही ना? तीखा (गुस्से वाला) व्यक्ति हो तो ऐसे विचार आएँगे या नहीं आएँगे? बंडखोर (बागी) है... इसलिए सच बोला।

ये युवा वर्ग बहुत ही सुंदर है, एकदम सच्चा। कोई सुख मिलता नही है फिर भी सत्य को छोड़ता नही है।

इसलिए मैंने उसका कंधा थपथपाया, कि 'धन्य है तू कि मेरी रूबरू में तू मुझे गोलीबार करने की बात करता है, तूने सच बोला!' धन्य है इस युवा वर्ग को! इतना यदि सच होगा तो युवा वर्ग एकदम ही हाई लेवल पर पहुँच जाएगा और यदि ये युवा वर्ग हमारे निमित्त (संपर्क) में आएँगे, तो जितने आएँगे उतने एकदम से ऊपर चढ़ जाएँगे। क्योंकि हम उनके निमित्त हैं। और ये युवा वर्ग बहुत ही सुंदर है। एकदम सच्चा! कोई सुख मिलता नहीं है फिर भी सत्य को छोड़ता नहीं है।

उस समय मुझे एक व्यक्ति ने कहा कि, 'आपने उसका कंधा थपथपाया, लेकिन आपके जैसे ऐसे सुननेवाले भी नहीं मिलेंगे। आप पर गोलीबार करने की बात कर रहा है, फिर भी आप उसका कंधा थपथपा रहे हो? यदि दूसरा कोई होता तो उसे निकाल बाहर कर देता।' तब मैंने कहा, 'नहीं, हम ऐसा नहीं करते। ये तो अक्रम विज्ञान है! आप चाहे जितना भी विरोध करो फिर भी हमें कोई हर्ज नहीं होता। विरोध तो, हम में कोई भूल हो उसका कारण है। हमारी ही कोई भूल होगी। विरोध क्यों उत्पन्न होता है? किसी भी प्रकार का विरोध उत्पन्न हो वह मेरी ही भूल है! यानी युवा वर्ग तो बहुत अच्छी राह पर जा रहे हैं। उन्हें निमित्त मिल जाएँगे।'

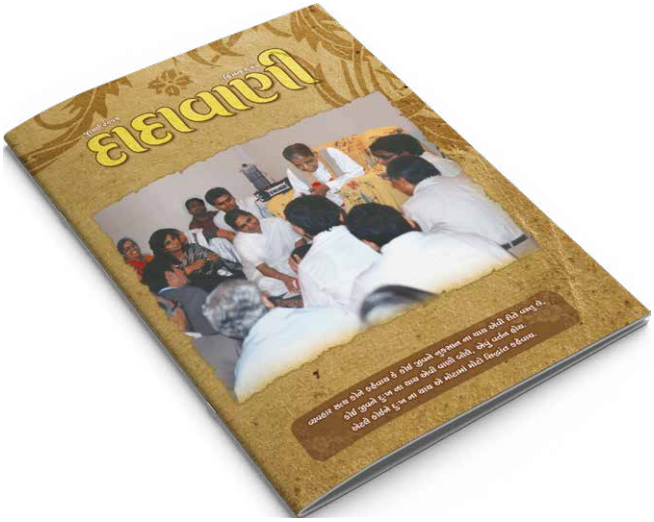

SWOT एनालिसिस

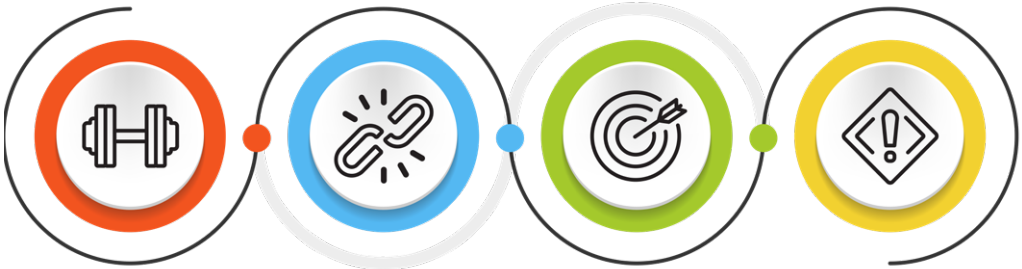

वर्कशाप की शुरुआत एक स्वॉट एनालिसिस से हुई।

इस एनालिसिस में आज के युवाओं में क्या-क्या स्ट्रेन्थ (शक्तियाँ) हैं, उनमें क्या विकनेस (कमजोरियाँ) हैं उसका एनालिसिस करना था। साथ में युवाओं के लिए क्या ऑपर्च्युनिटी (विकास के मौके) हैं और युवाओं के सामने क्या थ्रेट (जोखीम) हैं उसका एनालिसिस भी करना था।

नियति, सान्वी और विनीत के अलावा इस वर्कशॉप में दूसरे भी कई यूथ लड़के, लड़कियाँ, यूथ के माता-पिता, यूथ के संपर्क में रहने वाले शिक्षक, काउन्सलर, कोऑर्डिनेटर ऐसे लगभग ३० लोग जुड़े थे। लगभग २ घंटे चले स्वॉट एनालिसिस के इस वर्कशॉप के पहले राउंड में सबके व्यक्तिगत मत लिए गए। उसके बाद सेकन्ड राउन्ड में यूथ लड़कियाँ, लड़के, पेरेन्ट्स और कोऑर्डिनेटर ऐसे चार ग्रुप बनाए गए। उस ग्रुप में सभी ने अपने विचार शेयर किए।

यह सिर्फ एक सर्वे नहीं था जिसमें कोई फॉर्म भरकर जवाब देना होता है। परंतु वर्कशॉप में भाग लेने वालों के अनुभवों के शेयरिंग से निष्कर्ष निकालना था। दो घंटे बाद मानों सभी के चेहरों पर एक नई अचिवमेन्ट का संतोष दिखाई दे रहा था।

वर्कशॉप में दूसरी भी कई बातों की शेयरिंग हुई, जो हम आगे जानेंगे लेकिन अभी स्वॉट एनालिसिस के रिज़ल्ट से शुरुआत करते हैं। पूरे वर्कशॉप का निष्कर्ष नीचे के चार्ट में दिखाया गया है, बहुत सारे जवाबों में से बहुमत के अनुसार महत्वपूर्ण पॉइन्ट्स यहाँ लिखें हैं। तो चलो जानते हैं, क्या था इस स्वॉट एनालिसिस का रिज़ल्ट और वर्कशॉप की दूसरी बातें।

No	Strength	%age
1	ओपन मांइडेड, हेल्दी माइन्डवाले	73.33%
2	हाइपर, फास्ट और कुछ भी जल्दी सीख सकते हैं	70.00%
3	रिस्क टेकर, चैलिन्जेस स्वीकार करने वाले	60.00%
4	क्लैरिटि और फ्रीडम मिलने पर जिम्मेदारी लेने वाले	53.33%
5	इनोवेटिव और क्रिएटिव (नए आइडिया सोच सकते हैं और इम्प्लिमेन्ट कर सकते हैं), स्मार्ट वर्क करने वाले	53.33%
6	ऐक्टिव, मौके का फायदा लेने वाले	30.00%
7	लॉज़िकल, कोई भी बात स्वीकार करने से पहले प्रश्न पूछकर समाधान करते हैं, स्वतंत्र विचार रखने वाले (independent thinker)	23.33%
8	सच बोलने वाले कम झूठ और कपट वाले	23.33%

No	Weakness	%age
1	कम मनोबल वाले, जल्दी डिप्रेस हो जाते हैं, ज्यादा सेल्फ डाउट वाले, अस्थिर (emotionally unstable)	53.33%
2	जो फेल्योर या रिजेक्शन सहन नहीं कर सकते, वास्तविकता को स्वीकार नहीं सकते	43.33%
3	कम मेहनत में फास्ट रिज़ल्ट की अपेक्षा, मेहनत करना पसंद नहीं	36.67%
4	पीअर प्रेशर, देखादेखी, कम्पैरिज़न और कॉम्पिटिशन की अधिकता - भौतिक सुविधाओं और साधनों के लिए	33.33%
5	सोशल मीडिया का अडिक्शन	33.33%
6	चित्त की एकाग्रता की कमी, मन का चलता चले (moody)	33.33%
7	सहनशक्ति की कमी, जल्दी गुस्सा हो जाते हैं	30.00%
8	दूरदर्शिता और फोकस का अभाव, लोगों को मिलना-जुलना टालते हैं	23.33%

No	Opportunities	%age
1	करियर में बहुत सारे ऑप्शन खुले हैं, अपने टैलेन्ट और नॉलेज के अनुसार किसी भी फील्ड में विकास कर सकते हैं।	100.00%
2	कुछ नया सीखने के लिए अनगिनत साधन, टेक्नॉलजी और इन्फॉर्मेशन सरलता से उपलब्ध हैं।	93.33%
3	नया स्टार्टअप शुरू करने के एन्टरप्रिनरशिप, कमाने के कई अवसर उपलब्ध हैं।	30 .00%
4	सही दिशा में मार्गदर्शन मिलने पर जैसा मोड़े वैसा मुड़ सकते हैं। अनुभवियों के पास से सीखने के सरल रास्ते खुले हैं।	26.67%
5	समझ और सूझ का सही दिशा में उपयोग करें तो करप्शन फ्री समाज और देश का भविष्य हैं, नये वर्ल्ड की स्थापना कर सकते हैं।	23.33%
6	आर्थिक सहायता के लिए स्कॉलरशिप/फंडिग के बहुत अवसर हैं।	16.67%
7	घर बैठे ग्लोबल एक्सपोशर मिलता है।	16.67%
8	युवाओं को आध्यात्मिक वातावरण और सेवा का स्कोप देती संस्थाओं का महत्व बढ़ा है।	10.00%

No	Threats	%age
1	स्ट्रेस, डिप्रेशन के कारण आत्महत्या तक कर लेना।	66.67%
2	सोशल मीडिया और इंटरनेट का जरूरत से ज्यादा उपयोग, उसके कारण बिगड़ती मानसिक स्थिति, साइबर क्राइम।	53.33%
3	जीवन में फ्रेन्ड्स, सोशल मीडिया और वेस्टर्न कल्चर का महत्व बढ़ने के कारण कुसंग और विषय-विकार में जल्दी स्लिप हो सकते हैं।	43.33%
4	क्विक फेम, ईज़ी पैसा पाने के लिए अपने संस्कारों और मूल्यों को खो देते हैं।	40.00%
5	असामाजिक होना, पेरेन्ट्स और बड़ों के साथ डीलिंग करने में कठिनाई, रिश्तों पर नकारात्मक प्रभाव।	33.33%
6	व्यसन, दारू-सिगरेट-ड्रग्स की तरफ बढ़ते जा रहे हैं।	26.67%
7	आसानी और सरलता से गलत मार्ग पर गुमराह हो सकते हैं, गलत रोल मॉडल का चुनाव, दिशाहीन, बहुत सारे ऑप्शन्स होने के कारण कन्फ्यूज़ होना।	20.00%

कौन सा पलड़ा भारी?

"पापा, यह गाँव है या श्मशान? मैं यहाँ परेशान हो गया हूँ। और कितना समय लगेगा?"

"तपन बेटा, बस, पंद्रह दिन और।"

"पंद्रह दिन! कैसे निकलेंगे? यहाँ फोन का नेटवर्क भी नहीं आता। किसी तरह एक दूर के पेट्रोल पंप से आपको कॉल कर रहा हूँ। ऊपर से यह धूल, यह गर्मी..."

"बेटा, मैं समझ सकता हूँ। लेकिन जब तक मैं यहाँ सब कुछ सेट नहीं कर लेता तब तक क्या कोई उपाय है?"

निराश होकर तपन ने फोन काट दिया। जल्दी से जीप में बैठकर ए.सी. ऑन किया और धूलेरा गाँव की तरफ जीप दौड़ा दी।

गाँव में तपन की देखरेख के लिए तपन के चाचा मणीभाई और उनका जवान लड़का विजय थे। तपन का व्यवहार देखकर विजय को आश्चर्य होता था। वह कभी गुस्से से भरा होता तो कभी गुमसुम बैठ रहता। कभी फोन पर लगा रहता, तो कभी पूरा दिन सोता रहता था। अगर विजय उसके साथ बात करने जाता, तो रोब से जवाब देता अथवा कुछ नहीं बोलता। ऐसे ही कई दिन बीत गए। एक दिन तपन गुस्से में बोला।

"ऐ विजय, तुम मेरे लिए गरम पानी रख दो, मुझे नहाना है।"

अरे इतनी गर्मी में गरम पानी? चलो, इसके बजाय तालाब पर चलते हैं! मजा आएगा।"

"अरे, उस गंदे पानी में? नो वे। क्या वहाँ स्विमिंग पूल की तरह रोज सफाई होती है? वेल, तुम जैसे देहाती को क्या पता स्विमिंग पूल कैसा होता है?"

विजय कुछ बोला नहीं। 'देहाती' का खिताब मिलने पर थोड़ा हँस दिया।

"पिताजी, यह तपन कभी-कभी बिना किसी कारण के गुस्सा हो जाता है, है ना?" तपन के रूम में जाने के बाद विजय ने पूछा।

"बेटा, वह जिंदगी से परेशान है।" मणीभाई ने जवाब दिया।

"हाँ, लगता ही है कि परेशान है। लेकिन परेशान होने से सोल्युशन आ जाएगा क्या?"

"सही बात है बेटा। लेकिन अभी उसे यहाँ अच्छा लगे ऐसा कुछ करते रहें।" मणीभाई ने कहा।

"पिताजी, क्या मैं आपका आशय जान सकता हूँ?" विजय ने नम्रता से पूछा।

"हाँ... आज मैं तुम्हें सारी बात बताता हूँ।" मणीभाई ने कहना शुरू किया।

तपन त्रिपाठी। शहर के बड़े डाक्टर रमेश त्रिपाठी का इकलौता बेटा। तीन साल का था तभी से मोबाईल और टैबलेट से खेलता था। माता-पिता दोनों जॉब में बिज़ी रहते, इसलिए उसे टाइम नहीं दे पाते थे। लेकिन पैसा बहुत था। उसे संभालने के लिए चार-चार नौकर थे, उसे जो चीज़ चाहिए होती वह उसे मिलती। खिलौने तो ठेठ अमेरिका और जापान से आते। फिर राजकुमार बड़ा हुआ। तुम जितने दिनों में कपड़े की जोड़ी बदलते हो, उतने दिनों में वह अपना फोन बदलता। और शहरों में तो अमीर लड़के को देखते ही तुरंत दूसरे लड़के घेर लेते हैं। वैसे त्रिपाठी परिवार एक संस्कारी परिवार था। लेकिन माँ-बाप के पास संस्कार पास-ऑन करने का टाइम ही कहाँ था? हाई-स्कूल में इंटरनेट पर घंटों समय बिताना, वीडियो गेम्स खेलने के लिए अलग रूम में बैठे रहना उसका रूटिन था। ऊपर से सिगरेट, ड्रिंग्स और डोपिंग की लत भी लग गई!

"डोपिंग...?" विजय ने पूछा।

"वो चरस-गाँजा कहते है ना, वो सब। वो सब हाई सोसाइटी के शौक। जो एक बार युवक की लाइफ में घुस गए तो फिर उसे बर्बाद कर देते है।"

यों तो तपन पढ़ने में बहुत होशियार था, आखिर डॉक्टर का बेटा है ना! लेकिन इन सभी व्यसनों का उसकी पढ़ाई पर असर हुआ। हालाँकि रमेशभाई का पैसा और उनकी पहचान काम आई। तपन को डोनेशन सीट पर मेडिकल में ऐडमिशन मिल भी गया। इकलौते बेटे का बहुत मोह था। 'मेरे तपन को सारी खुशियाँ मिलनी चाहिए, उसका बाल भी बाँका नहीं होना चाहिए।' लेकिन रमेश भाई को कहाँ पता था कि ये सब बेटे के लिए सुख नहीं बल्कि दुःख का निमंत्रण था।

कॉलेज में रमेशभाई ने उसे नया लालच दिया कि फाइनल एक्ज़ाम में अच्छे मार्क्स लाने पर उसे गाड़ी मिलेगी। लड़का ब्रिलियन्ट था। गाड़ी की लालच में फाइनल में फर्स्ट क्लास ले आया। लाल रंग की नई स्पोर्ट्स कार में पार्टी करने लड़कों के साथ क्लब गया। वहाँ ड्रिंक करके ड्राइव करते हुए पकड़ा गया और उसे जेल में डाल दिया गया। लेकिन रमेशभाई ने एक घंटे के अंदर ही पहचान द्वारा उसे जेल से छुड़वा लिया।

फिर मास्टर की पढ़ाई के लिए विदेश गया और वापस आकर सेटल हुआ। डॉक्टर की प्रेक्टिस तो थी ही, लेकिन जल्दी पैसा कमाने के लालच में किसी बिज़नेस में फँस गया और कंपनी का दिवाला निकाल दिया। लोगों के पैसे फँसे होने के कारण सभी इन्वेस्टरस् उसके पीछे पड़े हैं। रमेशभाई ने उसे यहाँ भेज दिया। मुझसे कहा है कि 'मैं सबकुछ सेटल करूँ तब तक इसे संभालना।' बस, हमें इतना ही करना है।

विजय मणीभाई का आशय तुरंत समझ गया। तपन चाहे जितना भी गुस्सा करे, विजय शांति से उसकी बात सुन लेता उसे तकलीफ ना हो इसका ध्यान रखता। एक दिन घर में इलेक्ट्रिसिटि चली गई। बहुत गर्मी लग रही थी। तब विजय ने तपन से कहा,

"तपन, हॉस्पिटल चलना है मेरे साथ? पास के गाँव में ही है। वहाँ जेनरेटर है।" गर्मी से बचने के लिए तपन ना चाहते हुए भी उसके साथ गया।

हॉस्पिटल में एन्टर होते ही सब खड़े होकर "कैसे हो विजयभाई?, नमस्ते विजयभाई!" कहने लगे।

'अरे, यह विजय तो यहाँ बड़ा साहब है! मैं घर पर इससे नौकरों की तरह बात करता हूँ!' तपन ने मन ही मन सोचा। तपन विजय के साथ ही घूमता रहा। विजय केबिन में बैठा ही नहीं। पहले उसने हॉस्पिटल के हरएक वॉर्ड में जाकर छोटे-बड़े सभी के हालचाल पूछे, फिर वीडियो कोन्फ्रेन्स मीटिंग, पेशेन्ट की फैमली के साथ बातचीत की, फिर स्टाफ को बुला कर प्रोत्साहित किया। पलक झपकते ही शाम हो गई।

"विजय...हॉस्पिटल में तो बहुत प्रतिष्ठा है तुम्हारी...तुम्हारा एजुकेशन...?"

"मैंने मुम्बई से एम.बी.ए किया है। यहाँ का मैनेजमेन्ट संभालता हूँ। तुम्हारी तरह डॉक्टर होता तो इलाज करता!" विजय ने हँसकर जवाब दिया। तपन का चेहरा फीका पड़ गया। उसने देखा कि विजय इतनी सादी लाइफ जीता है लेकिन उसका चेहरा गर्व से चमक रहा है।

विजय गाँव में जन्मा था। वह पाँच वर्ष का था तभी उसकी मम्मी बीमारी में गुजर गईं। विजय को पढ़ाने के लिए मणीभाई शहर में शिफ्ट हो गए। वहाँ अपनी फैक्ट्री भी डाली। विजय के कॉलेज में आने के बाद फैक्ट्री दूसरों को सौंप कर धूलेरा वापस आ गए क्योंकि वे एक किसान थे। धरती माता को छोड़कर कॉन्क्रीट के जंगल में उन्हें अच्छा नहीं लगता था। विजय ने शहर में रहकर एम.बी.ए की पढ़ाई की और पढ़ाई पूरी होने के बाद शहर में ही नौकरी कर ली। पच्चीस साल की उम्र में उसे लगा कि उसके जीवन का कोई ध्येय नहीं है। बीमार माँ का इलाज नहीं हो पाने की वजह से उसने बचपन में मम्मी का प्रेम खोया था। संवेदनशील हृदय का होने के कारण गाँव में ही इलाज हो सके ऐसा एक अच्छा हॉस्पिटल बनाना अपना ध्येय बनाया। मणीभाई ने भी विजय को पूरा सपोर्ट किया और दोनों धूलेरा में बस गए।

हॉस्पिटल से लौटने के बाद तपन का विजय के प्रति रवैया बदल गया। वह थोड़ा नरम पड़ा और वह रोज़ विजय के साथ हॉस्पिटल जाने लगा। एक दिन एक भिखारी का लड़का तपन की हेल्प से ठीक हो गया। उसने उससे पैसे भी नहीं लिए। इससे भिखारी ने इतने आशीर्वाद बरसाए कि तपन की आँखें नम हो गईं। पहली बार उसे अपने डॉक्टर होने पर संतोष हुआ।

अब विजय और तपन अच्छे दोस्त बन गए थे।

एक बार तपन ने विजय से पूछा, "क्या तुम्हें गाँव की लाइफ पसंद है?"

"क्यों? इसमें पसंद नहीं आने जैसा क्या है?" विजय ने गर्व से जवाब दिया।

"यहाँ अच्छा लगने जैसा भी क्या है?" तपन ने पलटकर पूछा।

तभी अचानक बरसात शुरू हो गई। तपन ने बात बदलते हुए कहा, "एक गरम चाय हो जाए?"

"क्यों नहीं? लेकिन... दूध नहीं है। एक काम करते हैं, बाहर लारी की चाय पीते हैं।"

"नहीं, नहीं, इट्स नॉट हाइजीनिक!"

"अरे, गरम-गरम चाय पीने से कुछ नहीं होता।" दोनों बाहर गए। तपन अपनी जीप निकाल रहा था। विजय ने उसे रोककर कहा कि ट्रैक्टर में चलते हैं। तपन मुँह बिगाड़ते हुए बैठा। लेकिन गाँव के ऊबड़ खाबड़ रास्ते, आसपास लहराते खेतों के बीच, बरसात में नहाते हुए, खुली हवा में बैठे -बैठे चाय पीना उसे अच्छा लगा।

"कहो, ऐसा मज़ा ए.सी. कार में आता है?" विजय ने पूछा। तपन को मज़ा तो बहुत आ रहा था, लेकिन अंदर ही अंदर वह इस बात को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं था। उसने कुछ नहीं कहा।

फिर विजय उसे खेत में ले गया। तपन को मक्के की बाली काटना सिखाया, तपन को इसमें भी मज़ा आया। फिर दोनों ने बालियाँ भूनकर खाईं, कुएँ में से पानी खींचकर पिया, साग-सब्ज़ी तोड़ी। अंत में थककर दोनों तालाब के किनारे बैठ गए। अचानक विजय ने धक्का मारकर तपन को पानी में गिरा दिया और खुद भी पानी में कूद गया। दोनों शाम तक मजे से नहाते रहे। घर जाकर मणीभाई द्वारा बनाई हुई ताज़ी रोटी, मक्खन, ताज़े बैंगन का भरता, और हरे प्याज खाए। तपन को आज इतना मज़ा आया जो उसे कभी किसी फाइव स्टार होटल में भी नहीं आया था।

"खाना कैसा लगा?" विजय ने फिर से पूछा।

"पहले कभी मुझे खाने में इतना स्वाद नहीं आया, डोन्ट नो वाइ?" तपन ने पहली बार सच्चे दिल से जवाब दिया।

"क्योंकि आज तुम्हें सच में भूख लगी है!" विजय ने रहस्य खोलते हुए कहा।

"मतलब? आज तक मैं बिना भूख के ही खा रहा था?"

"हाँ दोस्त। भूख का अर्थ है, अभाव। जब किसी चीज़ का अभाव होता है तब वह चीज़ मज़ेदार लगती है। फिर वो खाना हो, पैसा हो या सुख!"

"आई डोन्ट बिलीव। मुझे लाइफ में किसी चीज़ की कमी नहीं है।"

"बट आर यू हैपी? अपने आप से पूछकर देखो तपन।"

तपन ने कुछ नहीं कहा। लेकिन नहीं बोलने का कारण उसकी सहमति थी।

एक दिन दोनों किराने की दुकान पर बैठे थे। व्यापारी सामान तौल रहा था तब विजय ने तराजू की ओर देखकर कहा,

"तपन... बाहर का कम्फर्ट, लग्ज़री, फन और अंदर की रियल हैपीनेस, ये दोनों एक तराजू के दो पलड़े जैसे हैं। जैसे-जैसे बाहर का पलड़ा भारी होता जाता है, जैसे कि टी.वी., इंटरनेट, गैजेट्स, पार्टियाँ आदि में से सुख लेना बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे अंदर

की हैपीनेस घट जाती है। और जब बाहरी पलड़ा हल्का हो जाता है, तो अंदर की रियल हैपीनेस बढ़ने लगती है! फिर इस प्रकार नॉन-ए.सी घर में, ट्रैक्टर में सफर करने में मज़ा आता है, सादा खाना भी स्वादिष्ट लगता है। किसी गरीब का फ्री ट्रीटमेन्ट करने में अलग ही प्रकार का संतोष मिलता है।"

"हम्म... सही है। डॉक्टर होने का संतोष मुझे पहली बार उस दिन ही मिला था। लेकिन पूरी लाइफ बिना कम्फर्ट की...?"

"बचपन से ही तुम्हें सब तरह के कम्फर्ट मिले लेकिन कहीं ऐसी हैपीनेस, ऐसा संतोष मिला?" तपन अपनी बात पूरी कर पाता उससे पहले ही विजय ने पूछा।

"विजय, आर यू हैपी?" तपन ने जवाबी सवाल किया।

"यस, यहाँ मेरा लक्ष्य साकार हो रहा है और रोज़ रात को अच्छी नींद आती है!" विजय ने गर्व से कहा।

तपन ने कुछ कहा नहीं। उसका पूरा जीवन उसकी आँखों के सामने फ्लैशबैक की तरह गुजर गया। वह एकदम से खड़ा हो गया। विजय को लेकर वह जीप में बैठा और जीप पेट्रोल पंप की ओर ले गया। वहाँ जाकर अपने फादर रमेशभाई के साथ फोन पर कुछ बात की। फिर विजय के पास आकर पूछा,

"विजय, क्या मुझे तुम्हारे हॉस्पिटल में टेम्परारी डॉक्टर का जॉब दोगे?"

विजय का आँखों में चमक आ गई। उसने तपन के कंधे पर हाथ रखकर एक बड़ी सी स्माइल दी। दोनों जीप में बैठ गए और जीप धूलेरा की तरफ ले गए।

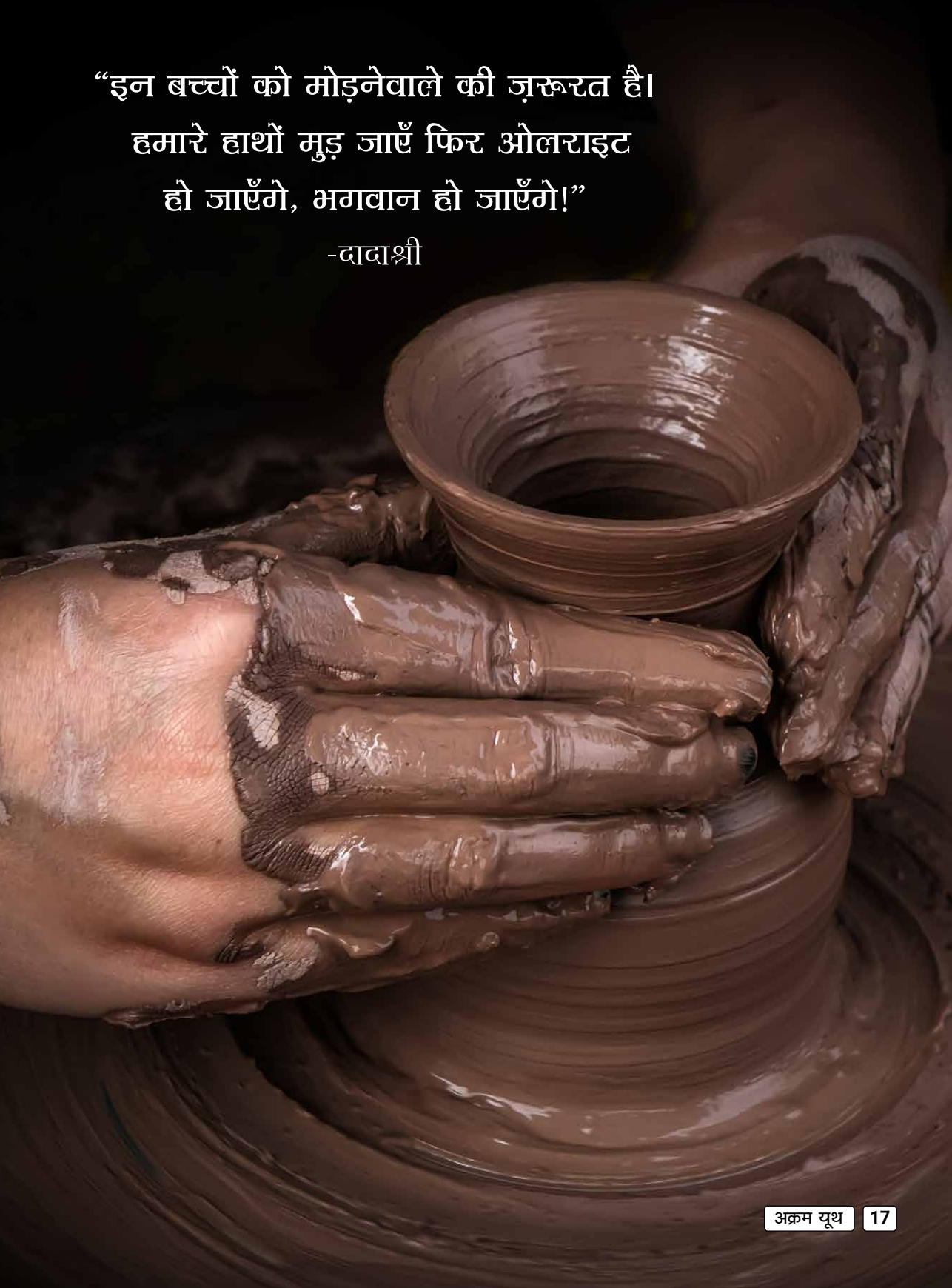

“इन बच्चों को मोड़नेवाले की ज़रूरत है।
हमारे हाथों मुड़ जाएँ फिर ओलराइट
हो जाएँगे, भगवान हो जाएँगे!”

-दादाश्री

आज का युवा कैसा?

नीरू माँ : बच्चों के बारे में दादाजी की राय बहुत अच्छी थी। कि आज की जेनरेशन में... प्रोस् एण्ड कॉन्स दोनों, सब में होते हैं।

आजकाल के बच्चों में एक चीज़ उन्हें बहुत अच्छी लगी, कि वे हेल्दी माइन्डवाले हैं। दे आर ऑल हेल्दी माइन्डेड। हेल्दी माइन्ड की व्याख्या क्या है? कि उनमें भेदभाव नहीं होता, चोरी-झूठ-कपट नहीं होता, सरलता होती है।

लेकिन उनकी थोड़ी नेगेटिव साइड भी है कि वे लोग बहुत मोही होते हैं। मोह का वातावरण अधिक होता है। जबकि पहले के हमारे ज़माने में मोह-बोह कम था। लेकिन तब झूठ बोलना, निंदा करना, कपट-ईर्ष्या -जलन ऐसा सब बहुत था। आज की जेनरेशन में भेदभाव कि ये तो हरिजन हैं, इनको छूना नहीं चाहिए या उनके साथ बात नहीं करनी चाहिए या ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसी तिरस्कार की भावना आज की जेनरेशन में देखने नहीं मिलती। अर्थात एक तरह का हेल्दी वातावरण है उनमें।

लेकिन दूसरी ओर, मोह बहुत ज्यादा बढ़ गया है, मोह! मोह के कारण नाटक, सिनेमा, उससे भी अधिक विषय-विकार में और ड्रिंक्स तथा ड्रग्स इन

सब में बहुत एक्सट्रीम चले गए हैं। हमारी कन्ट्री में यह सब थोड़ा कम है, फॉरन में तो बहुत ही कॉमन है। अपने यहाँ भी है पर कम मात्रा में है, ओपन नहीं। वहाँ तो खुले आम होता है। यहाँ वैसे खुले आम नहीं है। हम वहाँ जाते हैं तो, हिन्दुस्तान के बच्चों के ही टच में अधिक होते हैं। अर्थात हेल्दी माईन्ड आज की जेनरेशन का एक बहुत बड़ा गुण है।

दादा बच्चों के लिए कहते कि ये सब सीधे देवगति से आए हुए हैं। लम्बें बालों वाले। अब तो सभी गंजे हो गए हैं, लेकिन पहले दादा के समय में लंबे-लंबे बालों वाले थे। अब तो सिर मुंडवा लेते हैं, फैशन बदलती रहती है। सभी लंबे बालों वालों के लिए दादा कहते कि वे ऊपर से, सीधे देवगति में से आए हैं। यानी जो द्वापर और सत्युग के समय देवगति में गए थे वे अब सीधे कलियुग में आ गए हैं। बीच का काल उन्होंने देखा ही नहीं है। इसलिए प्योर, शुद्ध हैं। सिर्फ उन्हें देवगति में जो अप्सराओं का और नाच-गाने का शौक हो गया था ना, अभी यहाँ वही जारी है। हम तो ऑब्ज़र्व करते हैं। कभी किसी के घर गए होते हैं तो उनके लड़के-लड़कियाँ खेल रहे होते हैं तो डान्सिग मूड में चलते हैं, हाँ! और गुन गुन गुन कोई म्यूज़िक, सिनेमा के सॉन्ग गा रहे होते हैं। सीधा तो कोई चलता ही नहीं है।

किस आधार पर उन्होंने यह मोह और विषय-विकार सब पकड़ा है? क्योंकि वे नहीं जानते कि सच्चा सुख क्या है। इसलिए बाहर के सुख को वे सुख मानते हैं और उसे पाने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं और सच्चा सुख ढूँढ नहीं पाते और मिलता भी नहीं। अंदर का, आत्मा के सुख की बात तो उनके लिए बहुत दूर है। लेकिन शांति-सुख.. घर में माता-पिता के पास से अगर प्रेम और सुख मिले तो वे बाहर बहुत कम जाते हैं।

नीरू माँ की लाइफ का यू-टर्न

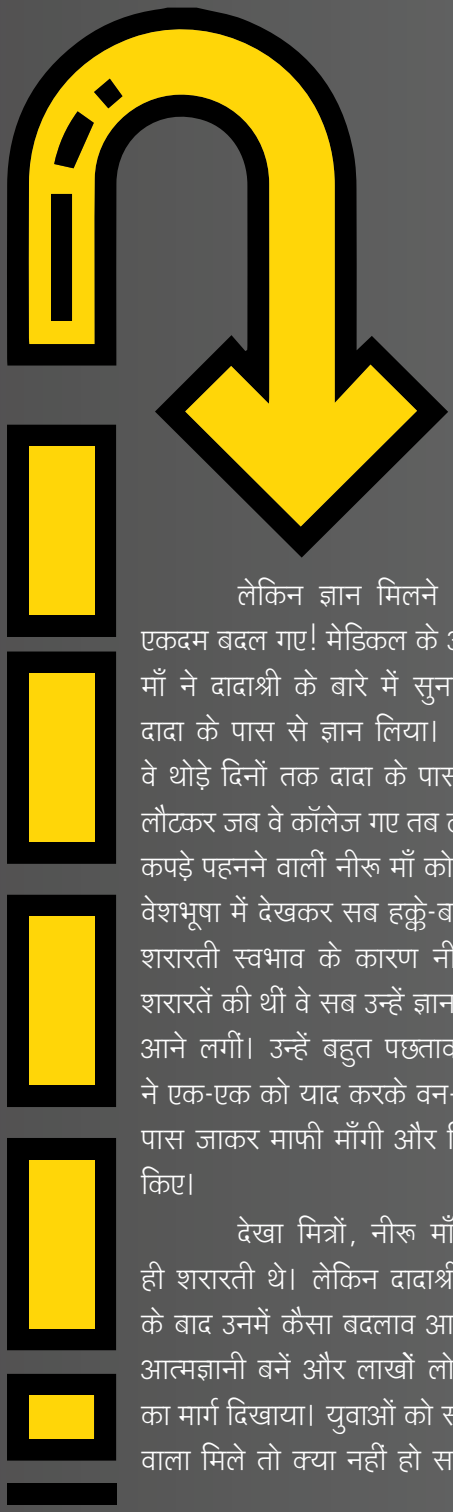

नीरू माँ बचपन से ही बहुत शरारती थे। एक तरफ तो वे पढ़ाई में हमेशा नबंर वन रहते लेकिन क्लास में वे पीछे की बेन्च पर बैठकर टीचर और लड़कियों का मज़ाक उड़ाते थे। मेडिकल कॉलेज में आने के बाद भी वे आखरी बेन्च पर ही बैठते क्योंकि आगे की बेन्च पर बैठने से वे शरारत नहीं कर सकते थे।

नीरू माँ के कॉलेज में सुबह एक बजे तक प्रैक्टिकल विषय होते थे। दोपहर एक से दो बजे तक लंच ब्रेक होता और दो बजे बाद थियरी क्लास होती थी। उस समय टिफ़िन में फुल लंच होता था। इसलिए स्वाभाविक है कि दाल-चॉवल-रोटी-सब्जी खाने के बाद दोपहर को नींद आती। उसमें भी यदि क्लास में कोई बोरिंग प्रोफेसर आ जाते तो नीरू माँ सहित पीछे की बेन्च पर बैठी लड़कियों की मस्ती शुरू हो जाती। नीरू माँ और उनके शरारती मित्र कॉलेज के पीछे की झाडियों से छोटे-छोटे केसरी रंग के फूलों के गुच्छे तोड़कर पीछे की बेन्च पर छुपा देते। फिर ऐसे बोरिंग लेक्चर में मस्ती करते, जब प्रोफ़ेसर ब्लेकबॉर्ड पर कुछ लिखने जाते तो उनमें से एक गुच्छा लेकर उनके गंजे सिर पर मारते।

लेकिन ज्ञान मिलने के बाद नीरू माँ एकदम बदल गए! मेडिकल के अंतिम वर्ष में नीरू माँ ने दादाश्री के बारे में सुना और वडोदरा में दादा के पास से ज्ञान लिया। ज्ञान लेने के बाद वे थोड़े दिनों तक दादा के पास रहे। वडोदरा से लौटकर जब वे कॉलेज गए तब टॉप टू बॉटम मैचिंग कपड़े पहनने वालीं नीरू माँ को अचानक सिम्पल वेशभूषा में देखकर सब हक्के-बक्के रह गए। अपने शरारती स्वभाव के कारण नीरू माँ ने जो-जो शरारतें की थीं वे सब उन्हें ज्ञान के प्रभाव से याद आने लगीं। उन्हें बहुत पछतावा हुआ। नीरू माँ ने एक-एक को याद करके वन-टु-वन हर एक के पास जाकर माफी माँगी और दिल से प्रतिक्रमण किए।

देखा मित्रों, नीरू माँ भी हमारी तरह ही शरारती थे। लेकिन दादाश्री का ज्ञान मिलने के बाद उनमें कैसा बदलाव आ गया! वे खुद भी आत्मज्ञानी बनें और लाखों लोगों को आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। युवाओं को सही दिशा में मोड़ने वाला मिले तो क्या नहीं हो सकता!

मोड़ने वाला मिले तो...

इस बार समर कैम्प मेरे लिए टर्निंग पाइन्ट रहा। यहाँ आने से पहले मेरा फ्रेन्ड के साथ झगड़ा हो गया था। हमने बात करना बंद कर दिया था। कैम्प में पहले दिन दीदी ने जी.डी. में उनकी फ्रेन्ड के साथ जब बोलचाल बंद हो गई थी तब वे इसमें से किस तरह बाहर निकले इसके बारे में अपना अनुभव शेयर किया। मैंने उसे अपने साथ कोरिलेट किया। मुझे समझ में आया कि जहाँ बहुत राग वहाँ अपेक्षा होती है और अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पातीं तो द्वेष उत्पन्न होता है। मैंने निश्चय किया कि मुझे अपनी फ्रेन्ड के लिए भाव नहीं बिगाडने हैं।

लेकिन मेरे मन में एक सवाल रह गया था कि यदि अपना इन्टेन्शन दूसरों को चोट पहुँचाना न हो फिर भी उसे हर्ट क्यों हो जाता है? इसका जवाब मुझे पूज्यश्री के सत्संग में मिला कि कोई बात याद आती रहती है, इसका अर्थ यह है कि उसके प्रतिक्रमण करना बाकी है। अभी भी कुछ बाकी है जिसके कारण सामने वाले को हमारे निमित्त से दुःख पहुँचता है। फिर हम सोचते हैं कि 'मैं आगे बढ़कर उससे बात करती हूँ तो भी क्यों वह मेरे साथ ऐसा बिहेव करती है? अब मैं भी उसके साथ ऐसा ही बिहेव करूँगी।' पूज्यश्री ने सत्संग में एक दूसरी लड़की के प्रश्न के जवाब में कहा था, 'हमें आडाई नही करनी चाहिए कि उसने मेरे साथ ऐसा किया तो मैं भी उसके साथ ऐसा ही करूँगी। हमें नॉर्मलिटी में रहकर बात करनी चाहिए।' पूज्यश्री ने यह भी कहा था कि थोड़ा तप करना सीखो। वह बात मुझे बहुत टच हो गई कि फ्रेन्ड के तरफ से थोड़ा भी अपमान मिलता है तो इगो हर्ट हो जाता है इसलिए तुरन्त रिएक्ट कर देते हैं इसके बजाय एडजस्ट होकर तप करने की जरूरत है। इस सब में मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ, फ्रेन्ड को दुःख पहुँचाने का पछतावा हुआ और उसे शुद्धात्मा देखना और प्रतिक्रमण करना शुरू हो गया।

समर कैम्प में पहली बार मुझे फन के साथ-साथ मैं जहाँ अटकती थी वहाँ से आगे बढ़ने की चाबियाँ मिली। वापस आने के बाद से मैं बहुत खुश रहने लगी हूँ। इतना ही नहीं, रोज चरणविधि करना भी स्टार्ट हो गया है और खाना खाते समय फोन देखने की आदत भी छूट गई। यह कैम्प मेरे लिए बहुत हेल्पफुल रहा!

- धरा परमार
उम्र १८

अंदर एक झाँकी...

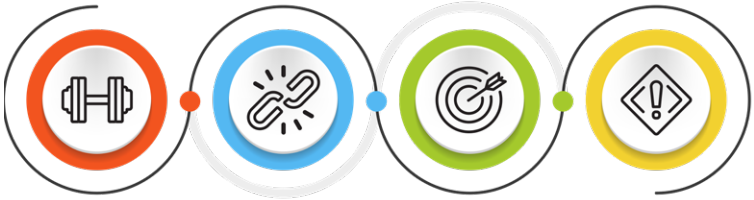

पूरा वर्कशाप अटेन्ड करने के बाद नियति, सान्वी और विनीत घर आए। नियति ने सबसे पहले अपनी दादी से माफ़ी माँगी और प्यार से उनके गले लग गई। विनीत ने भी जाकर पापा से 'सॉरी' कहा और उनके साथ खुलकर बात की। उसके पापा ने भी विनीत की बात शांति से सुनी। करियर को लेकर पापा के साथ बातचीत का दरवाज़ा खुल गया। सान्वी को भी यह सब देखकर अपनी भूल समझ में आई और पछतावा हुआ।

तीनों ने स्वॉट एनालिसिस का निष्कर्ष अपने कबर्ड पर, दरवाज़े के पीछे और डायरी में इस तरह लगाया कि उसे रोज़ पढ़ सकें। बस, तभी से अपनी स्ट्रेन्थ को विकसित करने, विकनेस से हमेशा चोकन्ना रहने और सही दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय किया।

मित्रों... नियति, सान्वी और विनीत को तो सही रास्ता मिल गया। क्या आपको भी मिला? तो चलो, हम सब अपना व्यक्तिगत स्वॉट एनालिसिस करें प्रत्येक खडं में कम से कम पाँच पॉइन्ट्स लिखेंगे।

Strength आपकी खुद की स्ट्रेन्थ (शक्तियाँ) :	**Weakness** आपकी खुद की विकनेस (कमजोरियाँ):
_____ _____ _____ _____ _____	_____ _____ _____ _____ _____
Opportunity इस समय जीवन में आपके पास विकास के अवसर :	**Threats** इस समय जीवन में आपके सामने कौनसे खतरे हैं :
_____ _____ _____ _____ _____	_____ _____ _____ _____ _____

दादा भगवान की...

ऑडियो बुक्स

और

ज्ञान-भक्ति के पद

५०+ एप पर..

SOUNDCLOUD | amazon music | storytel

YouTube Music | WYNKMUSIC | audible

Jio saavn | Spotify | iTunes

gaana | Music

मूल दीपक से प्रकटे दीपमाला

Scan Here

किसी भी समय...
कोई भी जगह...

जुलाई 2022
वर्ष : 10, अंक : 3
अखंड क्रमांक : 111

यह जेनरेशन करेगी वर्ल्ड का कल्याण

मेरे टच में आया हुआ एक भी लड़का झूठ नहीं बोलता है। डर लगता है फिर भी झूठ नहीं बोलता। इन लड़कों को देखकर मुझे होता है कि हमारे जमाने में कोई लड़का सच नहीं बोलता था। अगर डाँट मिले ऐसा हो तो सच नहीं बोलते थे। अपमान हो जाने का डर हो तो भी सच नहीं बोलते थे और ये लोग तो कुछ भी हो जाए चाहे मार क्यों ना डालें तो भी झूठ नहीं बोलते। तो फिर देखो ना, **यह प्रजा कितनी अच्छी है! हिन्दुस्तान का भावि कितना उज्जवल है!!**

- दादाश्री

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.